April 2021

RNI No. [illegible]   ISSN No. [illegible]

शोध सरोवर पत्रिका

10 अप्रैल 2021, वर्ष 3, अंक 18
[illegible] -14
[illegible]

हिन्दी विश्वभाषा

त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका
अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, केरल राज्य।

Dr Sheela T Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE, PANDALAM

Principal
N.S.S. College
Pandalam

Scanned with CamScanner

वैश्विक सन्दर्भ में हिंदी प्रचार में जुड़े प्रवासी साहित्यकारों की देन

◆ डॉ.लक्ष्मी.एस.एस

आजकल हिंदी विश्व भाषा के रूप में आगे बढ़ती जा रही है। इसमें साहित्य-सृजन की परम्परा भी बहुत अधिक है। इसकी शब्द संपदा विपुल है। हिंदी ने अन्यान्य भाषाओं के बहुप्रयुक्त शब्दों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया है। आज हिंदी में मौलिक और अनूदित साहित्य उपलब्ध है जो विश्व स्तरीय है। हिंदी की और एक विशेषता यह है कि उसमें संस्कृत के उपसर्गों तथा प्रत्ययों के आधार पर शब्द बनाने की अभूतपूर्व क्षमता है। हिंदी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी सिनेमा की देन मुख्य है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं। उसने सदा सर्वदा से विश्वमन को जोड़ा है।

भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने हिंदी के महत्व के सन्दर्भ में इस प्रकार कहा था कि "भारत विभिन्न भाषाओं का देश है और हर भाषा का अपना महत्व है। परन्तु पूरे देश की एक भाषा होना अत्यन्त आवश्यक है, जो विश्व में भारत की पहचान बने । आज देश को एकता की डोर में बांधने का काम अगर कोई एक भाषा कर सकती है तो वो सर्वाधिक बोली जाने वाली हिंदी भाषा ही है।" उन्होंने एक और ट्वीट पोस्ट में कहा "आज हिंदी दिवस के अवसर पर देश के सभी नागरिकों से अपील करता हूँ कि हम अपनी-अपनी मातृभाषा के प्रयोग को बढ़ाएं और साथ में हिंदी भाषा का भी प्रयोग कर देश की एक भाषा के पूज्य बापू और लौह पुरुष सरदार पटेल के स्वप्न को साकार करने में योगदान दें।" सुश्री प्रज्ञा गौड़, राजभाषा भारती, पृ.101, वर्ष 40, अंक 155, अप्रैल-जून 2018)

हिंदी की वैश्विक स्थिति के संदर्भ में लिये गये साक्षात्कार में भारत सरकार के गृह मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह जी ने कहा- 'विश्व के विभिन्न देशों में रह रहे भारतीय मूल के करोड़ों लोग हिंदी का बखूबी प्रयोग कर रहे हैं । इसके कारण आज हिंदी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। विगत दशकों में हिंदी का अन्तराष्ट्रीय विकास बहुत तेज़ी से हुआ । विदेशों से बहुत सारी पत्र-पत्रिकाएं लगभग नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं।' (राज भाषा, भाषा भारती, वर्ष 39, अंक 150, जन-मार्च 2017, पृ.3)।

हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ़ होकर विश्वव्यापी बन रही है। इंटरनेट के माध्यम से दूसरे देशों में हिंदी की पत्रिकाएँ निकल रही हैं। साथ ही अमेरिका, इंग्लैंड, मॉरीशस, लंदन आदि देशों में हिंदी के रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा विश्व मन को जीत रहे हैं। इस अवसर पर प्रवासी साहित्यकारों का योगदान भी स्मरणीय है ।

STN
Dr. Sheela T Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE
Scanned with CamScanner

हिंदी के प्रमुख प्रवासी साहित्यकार:

प्रवासी हिंदी साहित्य के अन्तर्गत अनेक प्रवासी साहित्यकार हैं जो अपनी लेखनी के माध्यम से भूमंडलीय देशों में अपनी-अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त कर रहे हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य पर गौर से दृष्टि डालें तो पाते हैं कि भारत के बाहर दुनिया के कई देशों में हिंदी साहित्य रचा जा रहा है। इसके अन्तर्गत मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, अमेरिका, कैनडा, न्यूज़ीलैंड, डेनमार्क, अर्जेण्टीना, नॉर्वे, जापान आदि आते हैं। विदेशों में रहकर साहित्य रचना करनेवाला लेखक आज इण्टरनेट के माध्यम से उस भाषिक साहित्य प्रेमियों से सहज गति से जुड़ गया है।

अमेरिका में रहकर हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार में जुड़े रचयिताओं में सुधा ओम ढींगरा, सुषमा बेदी, प्रतिभा सक्सेना, पुष्पा सक्सेना, इला प्रसाद, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, नीलम जैन, रचना श्रीवास्तव आदि के नाम सहज लिये जा सकते हैं।

इंगलैंड में हिंदी साहित्य के विकास में डॉ.लक्ष्मीमल्ल सिंधवी का नाम सर्वोपरि है। इसके अतिरिक्त इंग्लैंड में प्रवासी साहित्य के विकास में श्रीमती शैल अग्रवाल, पदमेश गुप्त, कृष्णकुमार, तेजेन्द्र शर्मा, दिव्या माथूर आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं।

मॉरिशस में आज हिंदी लेखन अनवरत विकास की दिशा में अग्रसर है। प्रो.विष्णु दयाल, सोमदत्त बखोरी, ब्रजेन्द्र 'मधुकर', स्व.अभिमन्यु अनत, मुनीश्वर लाल चिंतामणि, प्रहलाद राम शरण, ईश्वर जागासिंह आदि वहाँ के कुछ प्रमुख हिंदी साहित्यकार हैं ।

नेपाल में हिंदी पहली, दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में व्यवहृत होती है। साहित्य-सृजन का कार्य भी

सफल रूप से होता है। मोतीराम भट्ट, लोकनाथ, देवकोटा, गोपाल सिंह नेपाली, केदारमान सिंह, कृष्णचन्द्र मिश्र काशी प्रसाद श्रीवास्तव आदि हिंदी और नेपाली के कवियों ने प्रचुर मात्रा में हिंदी में साहित्य-सृजन किया है।

कैनेडा के हिंदी साहित्यकारों में शैलशर्मा, श्रीनाथ द्विवेदी, रमेश गुप्ता, रीमा गुप्त, कृष्ण कुमार गुप्त, सुरेंद्र कुमार आदि का विशेष योगदान है ।

दिव्या माथुर - 23 मई सन् 1949 को दिल्ली में जन्मी प्रवासी लेखिका दिव्या माथुर ब्रिटेन में बसी भारतीय मूल की हिंदी लेखिका हैं। प्रवासी कथा साहित्य में दिव्या माथुर का अग्रणी स्थान है, आप एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। उनकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित हैं-

कहानी संग्रह- आक्रोश (2004), पंगा (2008), आशा (2003), मेड इन इंडिया (2013)आदि।

कविता संग्रह- अंतः सलिला (1993), रेल का लिखा(1999), ख्याल तेरा (1998), चंदन पानी (2007), सितम्बर सपनों की राख (2003), झूठ, झूठऔर झूठ (2008)। उनके 'शाम भर बातें' नामक उपन्यास के केन्द्र में प्रवासी समाज है ।

सुषमा बेदी- सुषमा जी अमेरिका के प्रवासी हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण लेखिका हैं। उनका जन्म सन् 1945 को पंजाब में हुआ। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं- चिड़िया और चील (1995), यादगारी

Dr Sheela T Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
DEPARTMENT OF HINDI N.S.S. COLLEGE
Scanned with CamScanner

कहानियाँ (2014), तीसरी औरत(2016), सड़क की लय (2017) आदि। उनके प्रमुख उपन्यास है- हवन (1989), नव भूम की रसकथा(2002), गाथा अमरबेल की (1999), मोचे (2006), मैंने नाता तोड़ा (2009), पानी केरा बुदबुदा(2017) आदि।

इनका कहानी संग्रह 'तीसरी औरत' भारतीय एवं पाश्चात्य जीवन के द्वन्द्व व भारतीय संस्कृति के जुड़ाव की अभिव्यक्ति करता है । उनका 'हवन' उपन्यास प्रवासी साहित्य की महत्वपूर्ण कृति है। यह उपन्यास अमेरिका के साथ अन्य देशों में बसे हुए प्रवासियों के जीवन की त्रासदी का सटीक वर्णन करता है।

सुधा ओम ढींगरा - हिंदी साहित्यकार, पत्रकार तथा संपादक डॉ.सुधा ओम ढींगरा का जन्म जालंधर, पंजाब, भारत में हुआ था। रंगमंच, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की कलाकार रही डॉ.ढींगरा आजकल, अमेरिका में रहकर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यरत हैं। उनकी रचनाएँ हैं - नक्काशीदार केबिनेट (उपन्यास); दस प्रतिनिधि कहानियाँ,कमरा नंबर 103, कौन सी ज़मीन अपनी, वसूली, सच कुछ और था आदि कथा संग्रह; सरकती परछाइयाँ,धूप से रूठी चाँदनी, तलाश पहचान की, सफर यादों का आदि काव्य संग्रह।

पुष्पिता अवस्थी- पुष्पिता अवस्थी एक प्रवासी प्रतिष्ठित साहित्यकार मानी जाती हैं। लेकिन वे भारतवासियों की व्यथा-कथा लिखनेवाली प्रवासी साहित्यकार है, जिन्होंने करीबियाई देशों में रह रहे भारतवंशियों को अपनी कथा का आधार बनाकर उनको नई संजीवनी देने का एक पुण्य कार्य किया है। उन्होंने साहित्य की विविध विधाओं में लेखन-कार्य किया है, जिसमें नीदरलैण्ड एवं सूरीनाम में बसे भारतवंशियों एवं प्रवासी भारतीयों के सामाजिक परिवेश एवं उसमें आते परिवर्तन का चित्रण मिलता है। उनके कहानी संग्रह 'जन्म' में आठ कहानियाँ संकलित हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं- मुट्ठीभर अकेलापन, देहिया, इनिका, उपस्थिति, विन्टरकोनिंग, अधर्म, रिया आदि।

तेजेन्द्र शर्मा - तेजेन्द्र शर्मा लगभग दो दशकों से लन्दन में प्रवास जीवन बितानेवाले साहित्यकार हैं। तेजेन्द्र शर्मा जी ने लंदन को अपना देश माना है, उसे अपनी जीवन शैली और आचरण में आत्मसात कर लिया है। वे स्वेच्छा से लंदन जाकर बसे और वहाँ की संस्कृति-सभ्यता को हृदय से अपनाया। तेजेन्द्र शर्मा के सात कहानी संग्रह प्रकाशित हैं- कला सागर (1990), ढिबरी टाईट (1994), देह की कीमत (1999), यह क्या हो गया (2003), बेघर आँखें (2007), सीधी रेखा की पर्त (2009), कब्र का मुनाफा(2010) आदि।

सुदर्शन प्रियदर्शिनी- कथाकार सुदर्शन प्रियदर्शिनी का जन्म सन् 1942 में लाहौर में हुआ जबकि बचपन शिमला में बीता। आप अमेरिका में प्रवासी हैं और अपनी कहानियों, कविताओं और उपन्यासों के साथ विभिन्न साहित्यिक विधाओं से हिंदी साहित्य को अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही हैं।

प्रवासी हिंदी कथा साहित्य को सुदर्शन प्रियदर्शिनी ने परिपक्वता और निरंतरता प्रदान की है। उनके प्रमुख उपन्यास हैं- रेत के घर (भावना प्रकाशन), जालक (आधारशिला प्रकाशन), न भेज्यो विदेश (नमन प्रकाशन) आदि।

Dr. Sheela. T Nair
Head of the Dept. of Hindi
College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA-689 501
N.S.S. COLLEGE

Scanned with CamScanner

कहानी संग्रह - काँच के टुकड़े, उत्तरायण।

काव्य संग्रह- बराह, शिखण्डी युग, मुझे बुद्ध नहीं बनना

पंजाबी कविता संग्रह- मैं कोण हाँ

हाइकु - आठ हाइकु

छंद मुक्त -अँधेरे के नाम, आवाज़ दो, दीमक, दंभ, अहंकार, चाँद आदि।

अमेरिका और भारत के कई संकलनों में आपकी रचनाएँ संकलित हैं और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर रचनाओं का प्रकाशन हो रहा है। सुदर्शन प्रियदर्शिनी उन महान कथाकारों में से हैं जो अपने अनुभवों एवं संवेदनाओं को, कथा एवं पात्रों में विशेषकर अभिव्यक्त करती रहती हैं। उनकी रचनाओं में एक ओर अपने देश के प्रति प्यार है, तो दूसरी ओर स्वदेश-परदेश का द्वन्द्व भी है।

अभिमन्यु अनत - स्वर्गीस अभिमन्यु अनत मॉरीशस के हिंदी कथा-साहित्य के सम्राट हैं। उन्होंने अपने उच्च स्तरीय हिंदी उपन्यासों और कहानियों के द्वारा मॉरीशस को साहित्य मंच पर प्रतिष्ठित किया। उनकी कई रचनाएँ प्रकाशित हैं।

उषा राजे सक्सेना - उषा राजे सक्सेना प्रवासी साहित्य की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं । उन्होंने लम्बे समय तक लंदन में हिंदी साहित्य की कई विधाओं में सृजनात्मक योगदान दिया। उनके कथा संग्रह 'विश्वास की रजत सीपियाँ' (1996) और 'इन्द्रधनुष की तलाश में' (1997) प्रकाशित हुए। उनके कहानी-संग्रह हैं- 'प्रवास में '(2002), 'वाकिंग पार्टनर' (2004) आदि। आपने हिंदी की महत्वपूर्ण साहित्यक त्रैमासिक पत्रिका 'पुरवाई' का संपादन-कार्य भी किया है। प्रवास में हिंदी साहित्य की सेवा और प्रचार-प्रसार के लिए उन्हें विभिन्न संस्थाओं ने सम्मानित किया।

रेखा मैत्र- प्रवासी काव्य साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं रेखा मैत्र । उनके दस कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनका चर्चित काव्य संकलन है - 'बेशर्म के फूल'। रेखाजी ने अपनी कविताओं में भारतीयता की वाणी दी है।

सुनिता जैन- अमरिका में बसनेवाली लेखिकाओं में सुनिता जैन का नाम उल्लेखनीय है। उनकी रचनाएँ हैं- बोज्यू, सफर के साथी, बिन्दु, मरणातीत, गूँज-अनुगूँज आदि।

इस प्रकार प्रवासी साहित्यकार हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में बहुत कुछ कार्य कर रहे हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी भारतीयों की भावुकता प्रकट है, साथ ही अपनी भाषा के प्रति प्रेम भी व्यक्त है। ये सब हिंदी भाषा के विकास में वृद्धि दे रहे हैं, साथ ही साथ विश्व भाषा के रूप में हिंदी की व्यापकता का परिचय भी दे रहे हैं।

आजकल साहित्यिक आलोचना में 'विमर्श' शब्द का प्रचुरता से प्रयोग होता है, जैसे- स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, आदिवासी विमर्श, प्रवासी विमर्श आदि। प्रवासी विमर्श में प्रवासियों का विमर्श होता है।

◆ असिस्टन्ट प्रोफसर

हिन्दी विभाग,

एन.एस.एस कॉलेज, पंतलम्।

Dr. Sheela T. Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM
N.S.S. COLLEGE

2021- 2022.

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

Impact Factor 3.811

ISSN : 2395-7115
November 2021
Issue 14, Vol. 5

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Dr Ambili V. S

डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सम्पादक

विकास बेरवाल
अतिथि सम्पादक

Sd/-
Dr. SHEELA T. NAIR
HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
N.S.S. COLLEGE, PANDALAM
PATHANAMTHITTA (DIST.)
KERALA, PIN : 689 501

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (DT)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

24.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन	डॉ. माया शंकर	114–118
25.	इक्कीसवीं शताब्दी के हिंदी कथा साहित्य में ग्रामीण परिवारों का सामाजिक जीवन	मनोज कुमार, डॉ० जोगीराम	119–121
26.	बेनीपुरी के निबन्धों में नारी-विमर्श	मीनू पारीक	122–127
27.	समाज का प्रतिरूप व्यक्त करती अखिलेश की कहानियाँ	डॉ. प्रीति	128–140
28.	यात्रावृत्तांतों में भारत की शिक्षा प्रणाली	सुवाति, डा. अशोक त्रिपाठी	141–146
29.	विलक्षण गोपालदास नीरज और उनकी कविताओं की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति	डॉ. सुनीता कुमारी गुप्ता	147–149
30.	साहित्य के समाजशास्त्र की दृष्टि से मार्क्सवाद की उपयोगिता	प्रवीन वर्मा	150–153
31.	बलदेव वंशी : बाल मन के चितेरे	स्नेह लता	154–160
32.	भारतीय संस्कृति के पुरोधा : परशुराम	डॉ. दीप्ति धीर	161–163
33.	भारत के जनजातियों का अस्तित्व के लिये संघर्ष	प्रा.डॉ. सोमा पी. गोंडाने	164–167
34.	नारी विमर्श	तहुरा नाज़, डॉ. सोनिया यादव	168–172
35.	उत्तराखण्ड राज्य में रेशम उद्योग का आरम्भ एवं विस्तार	डॉ. विजय लक्ष्मी	173–175
36.	संजीव की कहानी 'प्रेत-मुक्ति' : एक अनुशीलन	अनस करीम	176–180
37.	उत्तराखण्ड राज्य में रेशम उद्योग की आधारभूत संरचना	डॉ. विजय लक्ष्मी	181–185
38.	उत्तर प्रदेश में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का इतिहास : एक अवलोकन	डॉ. अखिलेश कुमार	186–195
39.	अध्यात्म और विज्ञान : जीवन का समन्वित आधार	अंजली सिंह	196–201
40.	वैश्वीकरण का भारतीय संघवाद पर प्रभाव : केन्द्र राज्य सम्बधों के विशेष संदर्भ में	रवि शंकर	202–206
41.	मुस्लिम महिलाओं का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान	मो. शफीक	207–212
42.	भरत में जाति की राजनीति और दलित : एक अवलोकन	डॉ. सत्येन्द्र सिंह	213–217
43.	ममता कालिया कृत 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में स्त्री चेतना	डॉ० मनमीत कौर, निशा शर्मा	218–223
44.	व्यसन का अर्थशास्त्र	डॉ० प्रमोद कुमार श्रीवास्तव	224–227
45.	Contemporary Relevance of Mimamsa	Dr. Dilna Shelji	228-230
46.	Strategies of Successfully Managing Personal Finances for System Excellence	Devesh Pal	231-236
47.	हिन्दी कथा साहित्य में सेवासदन की उत्तरजीविता	प्रियंका सिंह	237–240
48.	हिन्दी महिला कहानी-लेखन : परंपरा एवं उपलब्धियाँ	डॉ. अम्बिली.वी.एस	241–246

पृष्ठ 9-9, 10-11, 12-14, 15-19, 20-24, 25-28, 29-32, 33-36, 37-38, 39-44, 45-48, 49-54, 55-59, 60-64, 65-70, 71-74, 75-78, 79-82, 83-86, 87-98, 99-101, 102-107, 108-113

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
DEPARTMENT OF HINDI N.S.S. COLLEGE PANDALAM KERALA - 689 501 Phone: 04734-252221
Scanned with CamScanner

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
November 2021 Page No. : 241-246

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी महिला कहानी–लेखन : परंपरा एवं उपलब्धियाँ

डॉ. अम्बिली.वी.एस

सहायक आचार्या, एन.एस.एस. कॉलेज, पन्दलम, पत्तनमतिट्टा, केरल।

कथा साहित्य को महिला–लेखन का ठोस आधार मानना उचित है। हिन्दी कहानी–साहित्य के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो यह ज्ञात हो जाता है कि कथा–साहित्य की दोनों विधाओं–कहानी तथा उपन्यास को समृद्ध बनाने में महिला कथाकारों का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। युगीन नारी–चेतना को व्यक्त करने वाला महिला कहानी–साहित्य समसामयिक जीवन स्थितियों की जटिल अनुभूतियों एवं प्रवृत्तियों का सच्चा प्रतिबिंब है। हिन्दी कथासाहित्य में महिला–लेखन की यात्रा की विस्तृत जानकारी के लिए कहानी–लेखन की परम्परा का अलग–अलग विश्लेषण करना अनिवार्य है।

महिला कहानी–लेखन के इतिहास को प्रमुख रूप से तीन खण्डों में विभाजित किया जा सकता है–

1. स्वतंत्रता–पूर्व कहानी–लेखन
2. स्वातंत्र्योत्तर कहानी–लेखन और
3. समकालीन कहानी–लेखन।

1. स्वतंत्रता–पूर्व कहानी–लेखन :-

सन् 1900 में 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के साथ हिन्दी में कहानी–लेखन का प्रारंभ हुआ था। लेकिन सन् 1915 में प्रेमचन्द जी के आगमन के साथ ही हिन्दी कहानी साहित्य में एक नवोन्मेष फैल गया था। उन्होंने हिन्दी कहानी साहित्य को मानव–जीवन से जोड़ा था। स्वतंत्रता पूर्व कहानी–क्षेत्र में प्रेमचन्द जी एक शलाका पुरुष के रूप में सुशोभित हैं। इसलिए विवेच्य युगीन कहानी लेखन को उनके नाम के साथ संयुक्त करके प्रेमचन्द–पूर्व कहानी–लखेन, प्रेमचन्द युगीन कहानी–लखेन, प्रेमचन्दोत्तर कहानी लेखन–जैसे तीन भागों में बांटा जा सकता है।

क) प्रेमचन्द-पूर्व कहानी-लेखन :-

प्रेमचन्द–पूर्व युग के कहानी–साहित्य की कालावधि सन् 1900 से 1915 ई. तक का समय है। अतः यह हिन्दी कहानी–साहित्य का प्रारंभिक काल है। इस काल के कहानीकारों में लेखिका बंगमहिला का स्थान सर्वोपरि है। उनका असली नाम राजेन्द्र बाला घोष था। सन् 1907 की "सरस्वती" पत्रिका में इनकी "दुलाईवाली" कहानी को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। कुछ आलोचकों ने यहाँ तक इसे हिन्दी की पहली मौलिक कहानी के रूप में भी स्वीकार किया है। "चन्द्रदेव से मेरी बातें," "दान प्रतिदान" और "कुंभ में छोटी बहू" आप की अन्य महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं।

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI ★ N.S.S. COLLEGE ★ PANDALAM, PTA (Dist.) KERALA - 689 501 Phone: 04734-252221

Scanned with CamScanner

प्रारंभिक कहानी–लेखिकाओं में जानकी देवी, सुभद्रा देवी, ठकुरानी शिवमोहिनी, कुन्ती देवी, फूलदेवी, कुमांयु आदि विशेष महत्व रखती हैं। इन्होंने सामाजिक व पारिवारिक जीवन को कहानियों का मुख्य विषय बनाया था। वनलता देवी, हेमन्तकुमारी चौधरी, सरस्वती देवी आदि लेखिकाओं की कहानियों में राष्ट्रीय चेतना झलकती थी। फूलदेवी लिखित "बड़े घर कीबेटी" कहानी "गल्पमाला" पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इस प्रकार इन लेखिकाओं ने पूर्व प्रेमचन्द युग में कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

ख) प्रेमचन्द-युगीन कहानी-लेखन :-

सन् 1915 से 1936 तक का काल प्रेमचन्द युग कहा जाता है। प्रेमचन्द युग हिन्दी कहानी का विकास काल है। इस युग में मानव–जीवन के विभिन्न आयामों से संबन्ध रखने वाली कहानियाँ रची गयीं। विवेच्य युग में प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद की कथा–रचनाओं ने तत्कालीन लेखिकाओं को प्रभावित किया था। इसलिए वे कहानी–लेखन की तरफ विशेष रुचि दिखाने लगीं। इन महिला–कहानीकारों में उषादेवी मित्रा (1897–1966 ई.), होमवती देवी (1906–1950 ई.), सत्यवती मल्लिक (जन्म : 1950 ई.), कमला चौधरी (जन्म : 1908 ई.) आदि लेखिकाओं का विशेष महत्व है। "चाँद" एवं "माधुरी"–इन दोनों पत्रिकाओं ने तत्कालीन लेखिकाओं के विकास–पथ में काफी सहायता प्रदान की थी।

प्रेमचन्द युगीन कहानी–लेखिकाओं में उषादेवी मित्रा का नाम सबसे महत्वपूर्ण है। जबलपुर में आपका जन्म हुआ था। आपकी प्रथम कहानी "मातृत्व" सन् 1933 में "हंस" पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। "पिऊ कहाँ", "मूर्त्तमृदंग", "मन का मोह", "देवदासी", "गोधूलि" आदि कहानियों की रचना आप ने इसी अवधि में की थी। आपकी प्रतिनिधि कहानियाँ "रात की रानी" कहानी संग्रह में प्रकाशित हुई हैं। समाज के उदात्त पक्षों का चित्रण करके उन्होंने अपनी कहानियों में यह संकेत किया है कि भारतीय नारी के लिए पाश्चात्य अनुकरण अहितकर है। आपकी सामाजिक कहानियाँ भावुकता एवं कल्पना से ओतप्रोत थी।

प्रेमचन्द युग के महिला कहानी–लेखन की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी– श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान का कहानी के क्षेत्र में पदार्पण। इन्होंने अपनी कहानियों में तत्कालीन सामाजिक, पारिवारिक एवं नारी–जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में लिखा गया है कि–"सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियाँ सामाजिक–पारिवारिक जीवन के व्यवहारिक चित्रण के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं।"[1] "बिखरे मोती" (1932) और "उन्मादिनी" (1934) आपके प्रमुख कहानी–संग्रह है। इन संग्रहों की अधिकांश कहानियों में भारतीय नारी की परिस्थितियों, समस्याओं तथा भावनाओं का संजग चित्रण किया गया है। आपकी "पापी पेट" इसी अवधि में रची गयी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कहानी है। तत्कालीन सामाजिक–राजनीतिक समस्याओं पर कहानी लिखने वाली लेखिकाओं में कमला त्रिवेणी, मुन्नी देवी भार्गव, सरस्वती वर्मा आदि भी खास महत्व रखती हैं। कुल मिला कर प्रेमचन्द युग में महिला कहानी–लेखन की मजबूत नींव डाली गयी और उसे कलात्मक ऊँचाई भी प्राप्त हुई।

ग) प्रेमचन्दोत्तर कहानी-लेखन :-

प्रेमचन्दोत्तर कहानी–लेखन की अवधि सन् 1936 और सन् 1950 के बीच का समय है। इस काल की प्रमुख कथा लेखिकाओं में सुभद्रा कुमारी चौहान, शिवरानी देवी, उषादेवी मित्रा, कमला चौधरी और सत्यवती मल्लिक का योगदान काफी महत्वपूर्ण था। इनकी कहानियों पर तत्कालीन राष्ट्रीय–जागरण, सामाजिक–चेतना, मार्क्सवाद, गाँधीवाद, मनोविश्लेषणवाद आदि का प्रभाव पड़ा था। प्रेमचन्द की अर्द्धांगिनी शिवरानी देवी ने प्रायः

Scanned with CamScanner

की है कि उनके प्रयत्न से हिन्दी कहानी-साहित्य अधिकाधिक समृद्ध एवं चमत्कृत हो रहा है। अतः महिला–कहानीकारों के बिना कहानी–लेखन की मुख्य धारा अधूरी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ- सूची :-

1. डॉ. नगेन्द्र (स), हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 474.
2. आशारानी व्योरा, भारतीय नारी : दशा, दिशा पृ.7
3. प्रो. एम. एस. जयमोहन नई पीढ़ी– नए हस्ताक्षर : सकरुण अनुभूतियों की सफल वर्तिका अल्पना मिश्र (लेख), संग्रथन, फरवरी 2010, पृ. 21

STN
Dr Sheela T Nair

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

Scanned with CamScanner

(2021-2022)

Dr. Sheela T. Nair

ISSN : 2229-5755

EDUCATION TODAY

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. XI, Number 5 January-December, 2021

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation
4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501

Scanned with CamScanner

'समीक्षक – डॉ. नगेन्द्र'
Dr. Sheela T. Nair 159

A Study of Job Satisfaction of Teacher Educators
Dr. Dharmendra Kumar and Pankaj Kumar 161

Guidelines for Contributors 165

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

Scanned with CamScanner

'समीक्षक – डॉ. नगेन्द्र'

Dr. Sheela T. Nair*

शुक्लोतर समीक्षकों में डॉ.नगेन्द्र का व्यक्तित्व सबसे अधिक शक्तिशाली है। उनका आलोचनात्मक कृतित्व व्यापक-एवं वैविध्यपूर्ण है। उन्होंने भारतीय काव्य शास्त्र के अनेक महिमामयी ग्रन्थों का सम्पादन किया है तथा उन ग्रन्थों में निहित अनेक काव्य शास्त्रीय तत्वों की ऐतिहासिक एवं मार्मिक व्याख्या की है। उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य काव्य शास्त्र का विधिवत् अध्ययन, मनन एवं चिन्तन करके स्वतन्त्र तथा तुलनात्मक दृष्टि से संश्लिष्ट व परिपूर्ण काव्य शास्त्र के निर्माण की शुरूआत की है।

शुक्लोतर हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में डा.नगेन्द्र का समस्त समीक्षा कार्य युगानुरूप, विकासशील एवं स्वतन्त्र चिंतक का है। आचार्य एवं समीक्षक के रूप में उनका योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। डॉ.नगेन्द्र का साहित्य विषयक पांडित्य अत्यन्त प्रखर है। साहित्यशास्त्र के प्रत्येक तत्व एवं सिद्धान्त के विषय में उनका स्वतन्त्र मत है। उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों एवं उनके तत्वों का मन्थन करके हिन्दी समीक्षकों के समक्ष साहित्यालोचन की विशिष्ट शैली को प्रस्तुत किया है।

'सुमित्रानन्दन पन्त' उनकी पहली आलोचना पुस्तक है। इस पहली पुस्तक से ही वे आलोचना के क्षेत्र में प्रतिष्ठित हो गये। 'साकेत-एक अध्ययन' उनकी आलोचना की दूसरी पुस्तक है। जिसमें आलोचक की दृष्टि में व्याख्या दीख पडती है। 'देव और उनकी कविता' में उनकी व्यावहारिक आलोचना को अपेक्षित ऊँचाई मिलती है। वास्तव में यह उनकी आलोचना की प्रतिनिधि पुस्तक है। इनके अतिरिक्त उनके लघुकाय-निबन्धों में भी प्राणवान साहित्यिक आलोचना को देखा-जा सकता है। काव्यालोचन के साथ-साथ कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र, आलोचना आदि पर भी उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये हैं। 'आधुनिक हिन्दी नाटक' प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों के सम्बन्ध में लिखी गयी आलोचनात्मक पुस्तक है जो उनके गहन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर प्रकाश डालती है।

छायावादी वातावरण में उनका साहित्यिक संस्कार हुआ था, इसलिए स्वाभाविक था कि वे व्यक्तिवादी होते। सम्भवतः व्यक्तिवादिता ने उन्हें कवियों - लेखकों की जीवनियों की ओर आकृष्ट किया। 'फ्रायड और हिन्दी साहित्य' 'निबन्ध में उनके इस संस्कार व फ्रायडीम मनोविज्ञान का सहज गठबन्धन देखा जा सकता है। कामायनी के सम्बन्ध में प्रकाशित उनके पाँच निबन्ध' उनके आलोचना-सिद्धान्त को निर्भ्रान्त रूप में स्पष्ट कर देते हैं। कविता के अतिरिक्त गद्य की विधा में लिखी हुई आलोचना ग्रन्थ में 'त्यागपत्र और नारी' तथा 'अज्ञेय और शेखर' में उन्हें अद्भुत सफलता

*Assistant Professor, N.S.S.College, Pandalam N.S.S. College, Pandalam

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S COLLEGE

Scanned with CamScanner

मिली है। 'त्यागपत्र' और 'शेखर एक जीवनी' की मूलवर्तीनी विचारधारा की गहरी छायबीन की गयी है; क्योंकि ये दोनों रचनाएँ उनके मनोवैज्ञानिक 'सोच' के अनुकूल पडती हैं।

डॉ. नगेन्द्र महान समीक्षक होने के साथ-साथ मूर्धन्य आचार्य भी हैं। उनकी मान्यतओं के पीछे शास्त्रीयता, तर्क एवं मनोविज्ञान का पर्याप्त बल है। उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य काव्य शास्त्र का अध्ययन, इतिहास और मनोविज्ञान की समन्विति के आधार पर किया है और मनोविश्लेषण पद्धति के आधार पर साहित्य सिद्धान्तों में नैरन्तर्य स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया। उनके विचार में अनुभूति का महत्व सर्वाधिक है। उनकी दृष्टि में साहित्य, का अनुभूतिमय होना ही साहित्य है। अनुभुति ही ऐसा तत्व है, जो काल और स्थान की सीमा का अतिक्रमण करके काव्य को काव्य की संज्ञा प्रदान करता है। अनुभूति को आधार बनाकर काव्य की महत्ता का मनोविज्ञान-सम्मत आकलन करने के कारण डॉ.नगेन्द्र अपने समकालीन छायावादी समीक्षकों से भी विशिष्ट हो गये।

उनके काव्य दर्शन के विवेच्य अंग अधिकांश रूप में प्राचीन है, परन्तु उनकी आख्यान पद्धति नवीन और वैज्ञानिक है। परिणाम स्वरूप उनका काव्य-दर्शन युगानुरूप और जीवन्त हो गया है। उन्होंने सौन्दर्यानुभूति को रसानुभूति का पर्याय मानते हुए समन्वयात्मकता पर वल दिया है। साहित्यिक मूल्यों में रसात्मक मूल्यों को सर्वोपरि माना है। उनकी रस-आस्था शास्त्र से पुष्ट और अन्तः प्रेरणा से उद्‌भूत है। उन्होंने अपने रसवादी विचारों को परम्परा से ग्रहण करके विकसित किया और उन्हें नवीन आयाम दिये। उन्होंने तीन तथ्यों की ओर संकेत किया है –

1. रस स्वयं आस्वाद्य न होकर आस्वाद है, जो आनन्द रूप है।
2. रस मूलतः एक है। इसी आधार पर रस के सभी भेदों और प्रभेदों, संख्या एवं रसांगों को केवल रस का व्यवहारिक पक्ष मानना चाहिए।
3. रस प्रक्रिया में कवि का भाव या अनुभूति ही प्रमुख है। उन्होंने अभिनवगुप्त की इस मान्यता को सहर्ष स्वीकार किया कि रस की स्थिति सहृदय के चित्त में होती है।

साहित्य को जीवन से सम्युक्त करके डॉ.नगेन्द्र ने उसे दो रूपों में माना है – क्रिया रूप में साहित्य, जीवन की अभिव्यक्ति है और प्रतिक्रिया रूप में वह जीवन का निर्माता और पोषक है। साधारणीकरण विषयक विवेचन करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया है कि साधारणीकरण कवि की अपनी अनुभूति का होता है। भाषा का भावमय प्रयोग साधारणीकरण का मूल आधार है, जो प्रयोक्ता की भाव-शक्ति पर निर्भर होता है। उन्होंने अलंकार, रीति, वक्रोक्ति और ध्वनि को रस का साधक मानते हुए उनके विवेचन में भी मनोविज्ञान का आश्रय लिया।

नगेन्द्र ने अरस्तु द्वारा प्रतिपादित 'विरेचन सिद्धान्त' को मनोवैज्ञानिक आधार से पुष्ट करते हुए 'मन की विशता' के रूप में ग्रहण किया है। विरेचन का आनन्द के साथ साम्य मानते हुए उन्होंने उसे रस सिद्धान्त के अंग के रूप में ग्रहण किया है। लोंजाइनस द्वारा प्रतिपादित 'उदात्त सिद्धान्त' एवं क्रोचे द्वारा प्रतिपादित अभिव्यंज्ञना सिद्धान्त को अपने विवेचन द्वारा स्पष्ट किया है।

अपनी मान्यताओं के प्रति उन्हें अटूट निष्ठा है। ईमानदारी उनका महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य है। वैयक्तिक स्पर्श के कारण उनकी भाषा शैली में सहजता है। नगेन्द्रजी की समीक्षा में एक साथ व्यक्तिवाद, रसवाद, मनोविज्ञान, प्रगतिवाद, मानवतावाद तथा सरसता के सभी तत्व मिलते है, जो कि उन्हें हिन्दी समीक्षा का मूर्धन्य समीक्षक बना देता है।

Scanned with CamScanner

मिली है। 'त्यागपत्र' और 'शेखर एक जीवनी' की मूलवर्तीनी विचारधारा की गहरी छायबीन की गयी है; क्योंकि ये दोनों रचनाएँ उनके मनोवैज्ञानिक 'सोच' के अनुकूल पडती हैं।

डॉ. नगेन्द्र महान समीक्षक होने के साथ-साथ मूर्धन्य आचार्य भी हैं। उनकी मान्यतओं के पीछे शास्त्रीयता, तर्क एवं मनोविज्ञान का पर्याप्त बल है। उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य काव्य शास्त्र का अध्ययन, इतिहास और मनोविज्ञान की समन्विति के आधार पर किया है और मनोविश्लेषण पद्धति के आधार पर साहित्य सिद्धान्तों में नैरन्तर्य स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया। उनके विचार में अनुभूति का महत्व सर्वाधिक है। उनकी दृष्टि में साहित्य, का अनुभूतिमय होना ही साहित्य है। अनुभुति ही ऐसा तत्व है, जो काल और स्थान की सीमा का अतिक्रमण करके काव्य को काव्य की संज्ञा प्रदान करता है। अनुभूति को आधार बनाकर काव्य की महत्ता का मनोविज्ञान-सम्मत आकलन करने के कारण डॉ.नगेन्द्र अपने समकालीन छायावादी समीक्षकों से भी विशिष्ट हो गये।

उनके काव्य दर्शन के विवेच्य अंग अधिकांश रूप में प्राचीन है, परन्तु उनकी आख्यान पद्धति नवीन और वैज्ञानिक है। परिणाम स्वरूप उनका काव्य-दर्शन युगानुरूप और जीवन्त हो गया है। उन्होंने सौन्दर्यानुभूति को रसानुभूति का पर्याय मानते हुए समन्वयात्मकता पर वल दिया है। साहित्यिक मूल्यों में रसात्मक मूल्यों को सर्वोपरि माना है। उनकी रस-आस्था शास्त्र से पुष्ट और अन्तः प्रेरणा से उद्भूत है। उन्होंने अपने रसवादी विचारों को परम्परा से ग्रहण करके विकसित किया और उन्हें नवीन आयाम दिये। उन्होंने तीन तथ्यों की ओर संकेत किया है –

1. रस स्वयं आस्वाद्य न होकर आस्वाद है, जो आनन्द रूप है।
2. रस मूलतः एक है। इसी आधार पर रस के सभी भेदों और प्रभेदों, संख्या एवं रसांगों को केवल रस का व्यवहारिक पक्ष मानना चाहिए।
3. रस प्रक्रिया में कवि का भाव या अनुभूति ही प्रमुख है। उन्होंने अभिनवगुप्त की इस मान्यता को सहर्ष स्वीकार किया कि रस की स्थिति सहृदय के चित्त में होती है।

साहित्य को जीवन से सम्युक्त करके डॉ.नगेन्द्र ने उसे दो रूपों में माना है – क्रिया रूप में साहित्य, जीवन की अभिव्यक्ति है और प्रतिक्रिया रूप में वह जीवन का निर्माता और पोषक है। साधारणीकरण विपयक विवेचन करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया है कि साधारणीकरण कवि की अपनी अनुभूति का होता है। भाषा का भावमय प्रयोग साधारणीकरण का मूल आधार है, जो प्रयोक्ता की भाव-शक्ति पर निर्भर होता है। उन्होंने अलंकार, रीति, वक्रोक्ति और ध्वनि को रस का साधक मानते हुए उनके विवेचन में भी मनोविज्ञान का आश्रय लिया।

नगेन्द्र ने अरस्तु द्वारा प्रतिपादित 'विरेचन सिद्धान्त' को मनोवैज्ञानिक आधार से पुष्ट करते हुए 'मन की विशता' के रूप में ग्रहण किया है। विरेचन का आनन्द के साथ साम्य मानते हुए उन्होंने उसे रस सिद्धान्त के अंग के रूप में ग्रहण किया है। लोंजाइनस द्वारा प्रतिपादित 'उदात्त सिद्धान्त' एवं क्रोचे द्वारा प्रतिपादित अभिव्यंजना सिद्धान्त को अपने विवेचन द्वारा स्पष्ट किया है।

अपनी मान्यताओं के प्रति उन्हें अटूट निष्ठा है। ईमानदारी उनका महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य है। वैयक्तिक स्पर्श के कारण उनकी भाषा शैली में सहजता है। नगेन्द्रजी की समीक्षा में एक साथ व्यक्तिवाद, रसवाद, मनोविज्ञान, प्रगतिवाद, मानवतावाद तथा सरसता के सभी तत्व मिलते है, जो कि उन्हें हिन्दी समीक्षा का मूर्धन्य समीक्षक बना देता है।

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

Scanned with CamScanner